पार्श्वनाथ जी की आरती PDF

ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा |
सुर नर मुनिजन तुम चरणन की, करते नित सेवा |
ॐ जय पारस देवा ||

पौष वदी ग्यारस काशी में, आनंद अतिभारी,
अश्वसेन वामा माता उर , लीनो अवतारी |
ॐ जय पारस देवा ||

श्यामवरण नवहस्त काय पग, उरग लखन सोहें ,
सुरकृत अति अनुपम पा भूषण , सबका मन मोहें |
ॐ जय पारस देवा ||

जलते देख नाग नागिन को, मंत्र नवकार दिया,
हरा कमठ का मान ज्ञान का, भानु प्रकाश किया |
ॐ जय पारस देवा ||

मात पिता तुम स्वामी मेरे, आस करूँ किसकी,
तुम बिन दाता और न कोई , शरण गहूँ जिसकी |
ॐ जय पारस देवा ||

तुम परमातम तुम अध्यातम, तुम अंतर्यामी,
स्वर्ग–मोक्ष के दाता तुम हो, त्रिभुवन के स्वामी |
ॐ जय पारस देवा ||

दीनबंधु दुःखहरण जिनेश्वर, तुम ही हो मेरे,
दो शिवधाम को वास दास , हम द्वार खड़े तेरे |
ॐ जय पारस देवा ||

pdfinbox.com

विपद–विकार मिटाओ मन का, अर्ज सुनो दाता,
सेवक द्वै–कर जोड़ प्रभु के , चरणों चित लाता |
ॐ जय पारस देवा ||

ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा |
सुर नर मुनिजन तुम चरणन की, करते नित सेवा |
ॐ जय पारस देवा ||

pdfinbox.com

pdfinbox.com